# यह जीवन है...

**पर्सनालिटी आपकी कैसी है, यह महत्वपूर्ण नहीं है। मेंटालिटी आपकी कैसी है, यह ज़्यादा महत्वपूर्ण है। हमें हमेशा ये बात याद रखनी है कि आलोचना करने वालों का भी आदर करना चाहिए, क्योंकि आपकी अनुपस्थिति में वो आपका नाम चर्चा में रखते हैं अर्थात् आपको याद तो रखते हैं ना!**

**इसलिए, ना बीती बातों का चिंतन कीजिए और ना ही आने वाले कल की चिंता कीजिए।**

**बस सभी के लिए अच्छी सोच रखिए, अच्छा व्यवहार कीजिए, मीठे बोल बोलिए।**

**सभी को सुख देने, खुशी देने वाले श्रेष्ठ कर्म कीजिए। और अपने वर्तमान को अच्छे से अच्छा बनाने की मेहनत कीजिए। जिससे आपके भूत और भविष्य दोनों अपने आप श्रेष्ठ हो जायेंगे।**

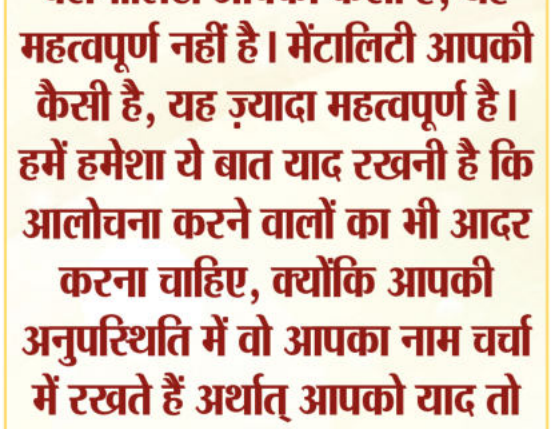

धनबाद-झारखंड। इंडियन मीडिया काउंसिल की ओर से ब्र.कु. अनु को उनकी प्रतिभा और समर्पणता को देखते हुए 'द ग्लोबल वुमेन अचीवर्स फेस्टिवल 2021 अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया।

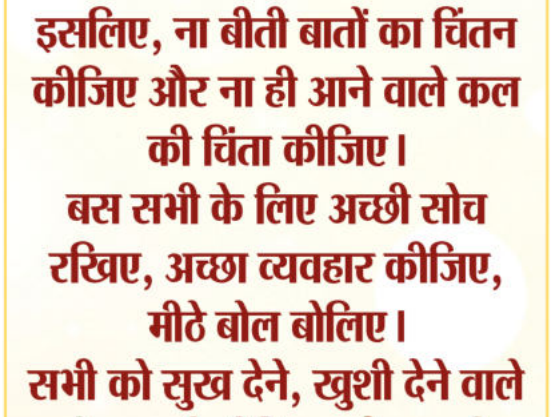

शाहगढ़-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ व तहसील प्रेस क्लब के तत्वाधान में आयोजित मीडिया सम्मेलन के पश्चात् ब्र.कु. शैल्जा दीदी,छतरपुर को शॉल ओढ़ाकर व मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए प्रकाश जैन,अध्यक्ष तहसील प्रेस क्लब, मनीष जैन,सचिव तहसील प्रेस क्लब, हुकुमचंद जैन,वरिष्ठ पत्रकार, बृजेश गुप्ता,दैनिक जागरण, संदीप जैन,साधना न्यूज़, सुनील तिवारी,टीवी न्यूज़ तथा साथ हैं ब्र.कु. माधुरी,छतरपुर,पन्ना नाका।

# कथा सरिता

## राहगीर के लिए सूचना

एक राजा बहुत ही महत्वाकांक्षी था और उसे महल बनाने की बड़ी महत्वाकांक्षा रहती थी। उसने अनेक महलों का निर्माण करवाया।

रानी उनकी इस इच्छा से बड़ी व्यथित रहती थीं कि पता नहीं क्या करेंगे इतने महल बनाकर!

एक दिन राजा नदी के उस पार एक महात्मा जी के आश्रम के वहाँ से गुज़र रहे थे तो वहाँ एक संत की समाधि थी और सैनिकों से राजा को सूचना मिली कि संत के पास कोई अनमोल खज़ाना था और उसकी सूचना उन्होंने किसी को न दी, पर अंतिम समय में उसकी जानकारी एक पत्थर पर खुदवाकर अपने साथ ज़मीन में गड़वा दिया और कहा कि जिसे भी वो खज़ाना चाहिए उसे अपने स्वयं के हाथों से अकेले ही इस समाधि से चौरासी हाथ नीचे सूचना पड़ी है निकाल लें और अनमोल सूचना प्राप्त कर लेवें और ध्यान रखें उसे बिना कुछ खाये-पिये खोदना है और बिना किसी की सहायता के खोदना है, अन्यथा सारी मेहनत व्यर्थ चली जायेगी।

राजा अगले दिन अकेले ही आया और अपने हाथों से खोदने लगा और बड़ी मेहनत के बाद उसे वो शिलालेख मिला और उन शब्दों को जब राजा ने पढ़ा तो उसके होश उड़ गये और सारी अक्ल ठिकाने आ गई। उस पर लिखा था कि राहगीर, संसार के सबसे भूखे प्राणी शायद तुम ही हो और आज मुझे तुम्हारी इस दशा पर बड़ी हँसी आ रही है। तुम कितने भी महल या घर बना लो, पर तुम्हारा अंतिम महल, घर यही है। एक दिन तुम्हें इसी मिट्टी में मिलना है।

सावधान राहगीर, जब तक तुम मिट्टी के ऊपर हो तब तक आगे की यात्रा के लिये तुम कुछ जतन कर लेना, क्योंकि जब मिट्टी तुम्हारे ऊपर आयेगी तो फिर तुम कुछ भी न कर पाओगे। यदि तुमने आगे की यात्रा के लिए कुछ जतन न किया तो अगले जन्म में तुम क्या लेकर जाओगे? ये मत भूलना कि तुझे भी एक दिन इसी मिट्टी में मिलना है बस तरीका अलग-अलग है। फिर राजा जैसे-तैसे कर के उस कुएँ से बाहर आया और अपने राजमहल गया।

उस शिलालेख के उन शब्दों ने उसे झकझोर के रख दिया और सारे महल जनता को दे दिये और 'अंतिम घर' की तैयारियों में जुट गया।

इस मिट्टी ने जब रावण जैसे सत्ताधारियों को नहीं बख्शा तो फिर साधारण मानव क्या चीज़ है! सभी को एक दिन इसी मिट्टी में मिलना है क्योंकि ये मिट्टी किसी को नहीं छोड़ने वाली।

## बुद्धि की परख

एक सौदागर राजा के महल में दो गायों को लेकर आया - दोनों ही स्वस्थ, सुंदर व दिखने में लगभग एक जैसी थीं।

सौदागर ने राजा से कहा, "महाराज ये गायें माँ-बेटी हैं परन्तु मुझे यह नहीं पता कि माँ कौन है व बेटी कौन है, क्योंकि दोनों में खास अन्तर नहीं है। मैंने अनेक जगह पर लोगों से पूछा किंतु कोई भी इन दोनों में माँ-बेटी की पहचान नहीं कर पाया। बाद में मुझे किसी ने यह कहा कि आपका बुजुर्ग मंत्री बेहद कुशाग्र बुद्धि का है और यहां पर मुझे अवश्य मेरे प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा। इसलिए मैं यहाँ पर चला आया - कृपया मेरी समस्या का समाधान किया जाए।"

यह सुनकर सभी दरबारी मंत्री की ओर देखने लगे। मंत्री अपने स्थान से उठकर गायों की तरफ गया। उसने दोनों को बारीकी से निरीक्षण किया किंतु वह भी नहीं पहचान पाया कि वास्तव में कौन माँ है और कौन बेटी?

अब मंत्री बड़ी दुविधा में फंस गया, उसने सौदागर से एक दिन की मोहलत मांगी। घर आने पर वह बेहद परेशान रहा - उसकी पत्नी इस बात को समझ गई। उसने जब मंत्री से परेशानी का कारण पूछा तो उसने सौदागर की बात बता दी।

यह सुनकर पत्नी बोली 'अरे! बस इतनी-सी बात है - यह तो मैं भी बता सकती हूँ।'

अगले दिन मंत्री अपनी पत्नी को वहाँ ले गया जहाँ गायें बंधी थी।

मंत्री की पत्नी ने दोनों गायों के आगे अच्छा भोजन रखा - कुछ ही देर बाद उसने माँ व बेटी में अंतर बता दिया। लोग चकित रह गए।

मंत्री की पत्नी बोली "पहली गाय जल्दी-जल्दी खाने के बाद दूसरी गाय के भोजन में मुंह मारने लगी और दूसरी वाली ने पहली वाली के लिए अपना भोजन छोड़ दिया, ऐसा केवल एक माँ ही कर सकती है- यानी दूसरी वाली माँ है। माँ ही बच्चे के लिए भूखी रह सकती है। माँ में ही त्याग, करुणा, वात्सल्य, ममत्व के गुण विद्यमान होते हैं।

## मित्रता की परिभाषा

एक बेटे के अनेक मित्र थे, जिनपर उसे घमंड था। पिता का एक मित्र था लेकिन था सच्चा।

एक दिन पिता ने बेटे को बोला कि तेरे बहुत सारे दोस्त हैं उनमें से आज रात तेरे सबसे अच्छे दोस्त की परीक्षा लेते हैं।

बेटा सहर्ष तैयार हो गया। रात को 2 बजे दोनों बेटे के सबसे घनिष्ठ मित्र के घर पहुंचे, बेटे ने दरवाजा खटखटाया, दरवाजा नहीं खुला, बार-बार दरवाजा ठोकने के बाद अंदर से बेटे का दोस्त उसकी माताजी को कह रहा था कि माँ कह दे मैं घर पर नहीं हूँ। यह सुनकर बेटा उदास हो गया, अतः निराश होकर दोनों लौट आए। फिर पिता ने कहा कि बेटे आज तुझे मैं अपने दोस्त से मिलवाता हूँ। दोनों पिता के दोस्त के घर पहुंचे। पिता ने अपने मित्र को आवाज़ लगाई।

उधर से जवाब आया कि ठहरना मित्र, मैं अभी आया। और फिर उनका मित्र जब बाहर आया तो बोला कि क्या हुआ, जो इतनी रात को दरवाजा खटखटाया? अक्सर मुसीबत दो प्रकार की होती है, या तो रूपये-पैसे की या किसी से विवाद हो गया हो, अगर तुम्हें रूपये की आवश्यकता है तो ये रूपये की थैली ले जाओ, और किसी से झगड़ा हो गया हो तो ये तलवार लेकर मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। तब पिता की आँखे भर आई और उन्होंने अपने मित्र से कहा कि, मित्र मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। मैं तो बस मेरे बेटे को मित्रता की परिभाषा समझा रहा था। ज़िन्दगी में दो मित्र ज़रूर होने चाहिए, एक कृष्ण जो ना लड़े फिर भी जीत पक्की कर दे और दूसरा कर्ण जो हार सामने हो फिर भी साथ ना छोड़े।